IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 2, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी उत्थान व नारी चेतना के विविध स्वर

Anju Sharma

Assistant Professor, Department of Hindi, Shaheed Captain Ripudaman Singh Govt. College, Sawai Madhopur, Rajasthan, India

सार: उन्होंने अपने काव्य में साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित नारियों को यथोचित् आदर एवं गरिमामय धरातल प्रदान किया है। उर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया आदि नारियों का चरित्र उनकी लेखनी रूपी ज्योति से प्रकाशित एवं उज्ज्वल हुआ है । इस प्रकार कवि ने नारी अस्मिता, स्वतंत्रता तथा नारी समानता का स्वर मुखरित किया है।

I. परिचय

मैथिलीशरण गुप्त यद्यपि राष्ट्रीय चेतना के लिए जाने जाते हैं लेकिन फिर भी उनके साहित्य में अन्य काव्यगत प्रवृतियां व विषय-वस्तु का वर्णन भी प्रभावी व व्यापक रूप में हुआ है | उन्होंने इतिहास की उन नारी पात्रों को उच्च शिखर पर बिठाया जिनके लिए हमारा इतिहास प्रायः मौन रहा है | उर्मिला, यशोधरा और विष्णुप्रिया जैसे नारी पात्रों को आधार बनाकर उन्होंने जिन काव्य-ग्रंथों की रचना की उससे इन नारी पात्रों के व्यक्तित्व के विषय में कुछ नई मान्यताएं स्थापित होती हैं और पाठकों के मन में इन नारी पात्रों के प्रति एक विशेष सम्मान की भावना का सृजन होता है | इतना ही नहीं गुप्त जी ने कैकेयी, कुब्जा आदि नारी पात्रों को घृणा एवं अपमान की संकीर्ण गलियों से निकालकर सम्मानीय पद पर सुशोभित किया | मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चित्रण रीतिकालीन कवियों के समान अश्लील न होकर छायावादी कवियों की भाँति पवित्र है |

मैथिलीशरण गुप्त जी के अनुसार नारी का जीवन प्रायः दुखों और विवशताओं से भरा होता है | वह जीवन भर अपनी संतान का पालन-पोषण करती है, अपने परिवार के सदस्यों की देखरेख करती है ; लेकिन उसकी आँखों से सदैव आँसू छलकते रहते हैं |[1,2,3]

नारी त्यागशीलता, ममता, कोमलता, श्रद्धा आदि गुणों के होने पर भी खुशियों से वंचित रहती है | इस तथ्य को अभिव्यक्त करते हुए गुप्त जी कहते हैं —

" अबला जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी |"

गुप्त जी के अनुसार किसी परिवार के विकास में नारी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है | पुत्र को संस्कार देने, उसे जीवन की विकट परिस्थितियों से जूझने के लिए तैयार करने और उसके उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करने में माँ की भूमिका अप्रतिम होती है | नारी पत्नी के रूप में अपने पति का संबल बनते हैं | नारी उसके आदर्शों की संवाहिका और उसकी प्रेरणा शक्ति होती है | मैथिलीशरण गुप्त जी 'साकेत' में सीता को राम की तथा 'उर्मिला' में उर्मिला को लक्ष्मण की प्रेरणा शक्ति मानते हैं | सीता और उर्मिला दोनों ही स्वयं दुख झेलते हुए अपने-अपने पतियों के आदर्शों की रक्षा करती हैं | ठीक यही स्थिति 'यशोधरा' में दिखाई देती है जहाँ यशोधरा सिद्धार्थ के घर छोड़कर चले जाने पर उसके निर्णय का सम्मान करती है और सिद्धार्थ को आत्मग्लानि से बचाकर उसे सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध बनने और मानव सेवा के मार्ग पर चलने के कार्य को सरल बनाती है |

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चित्रण से उनके हृदय की विशालता एवं उदारता का परिचय मिलता है | गुप्त जी ने नारी के न्यायोचित अधिकार की मांग की है | शकुंतला, सैरंध्री, सीता, उर्मिला, कैकेयी, मांडवी, राधा, कुब्जा, हिडिंबा आदि नारी पात्रों के माध्यम से उन्होंने नारी के त्यागमय, प्रेरक, उज्जवल पक्ष को उद्घाटित किया है | गुप्त जी की यह नारी भावना न तो रीतिकालीन वासना से युक्त है और न भक्तिकालीन रागवृत्ति से पूर्ण | नारी को प्रेम, पवित्रता और शक्ति का समन्वित रूप मानते हुए वे लिखते हैं —

"हैं प्रीति और पवित्रता की मूर्ति-सी वे नारियाँ,
हैं गेह में वे शक्तिरूपा, देह में सुकुमारियाँ |"

गुप्त जी की नारियों का स्वरूप प्रायः अबला के रूप में है | वे विभिन्न प्रकार के कष्टों को सहन करती हुई अपने कर्तव्य का पालन करती रहती हैं | कहीं-कहीं न्यायोचित अधिकारों की माँग तो करती हैं परंतु उनके लिए दृढ़ आग्रह करने का सामर्थ्य उनमें नहीं है | गुप्त जी ने अपने काव्य में वर्णित नारियों के इस अवगुण को भारतीय संस्कृति के आवरण से ढकने की कोशिश की | हाँ ; प्रेम, त्याग, समर्पण आदि गुणों के दृष्टिकोण से उनके नारी-पात्र हिंदी साहित्य में अद्वितीय बन पड़े हैं |

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

उर्मिला अपने पति लक्ष्मण के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देती है | उर्मिला के त्याग की पराकाष्ठा को गुप्त जी ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है —
"नव वय में ही विश्लेष हुआ, यौवन में ही यति वेश हुआ |"
गुप्त जी की नारियों का हृदय-पक्ष पुरुषों की अपेक्षा प्रबल है क्योंकि उनमें पुरुषों के समान केवल बौद्धिक प्रबलता ही नहीं है अपितु प्रेम, दया, करुणा, त्याग, सहानुभूति आदि मार्मिक गुणों का भी संयोग है | परंतु यह प्रबलता केवल सहन करने में है, प्रतिकार करने में नहीं | गुप्त जी की नारियाँ कहीं-कहीं गलत के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं लेकिन ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं | केवल ऐसे पात्रों के विरुद्ध नारी के कटु वचन दिखलाए गए हैं जिन्हें हम खल पात्र के रूप में जानते हैं लेकिन जब उनके अपने माता, पिता, पति या वे पात्र जिन्हें हम नायक या अवतार के रूप में जानते हैं, नारी के विरुद्ध कोई अन्यायपूर्ण निर्णय लेते हैं तो प्रताड़ित नारियाँ मूक हो जाती हैं | संभवतः गुप्त जी परम्परा से प्रचलित नारी शोषण के उदाहरणों के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस नहीं कर पाए |[4,5,6]
गुप्त जी की नारी तन से अबला व सुकुमारी है | केवल रावण जैसे खल पात्रों के विरुद्ध उसका सशक्त और सबल रूप सामने आता है | सीता रावण को करारी फटकार लगाते हुए नारी के सबल रूप की झलक दिखाती है —

"जीत न सका एक अबला का मन, तू विश्वजयी कैसा?
जिन्हें तुच्छा कहता है, उनसे भागा क्यों तस्कर ऐसा?"
मैथिलीशरण गुप्त जी ने नारी की कर्तव्यपरायणता का विशद वर्णन किया है | उनके अनुसार कर्तव्यपरायणता नारी का विशिष्ट गुण है | गुप्त जी की नारियां पति एवं पारिवारिक सदस्यों की उन्नति एवं सुख-सुविधा का ध्यान रखना अपना कर्तव्य मानती हैं | गुप्त जी की नारियाँ चाहे कितनी ही दुख में जी रही हों किंतु वे अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होती | राम के साथ सीता और लक्ष्मण के वन जाने का निर्णय सुनकर उर्मिला लक्ष्मण के मार्ग में विघ्न नहीं बनती |

"कहा उर्मिला ने हे मन! तू प्रिय-पथ का विघ्न न बन |"
गृहस्थ धर्म का पालन करना नारी का सर्वोपरि कर्तव्य माना जाता है | गुप्त जी की नारियां इस धर्म-पालन में कहीं भी नहीं चूकती | सीता वन में पौधों को पानी देना और खुरपी लेकर खेती करना अपना कर्तव्य मानती है | वह राम तथा लक्ष्मण के लिए रसोई बनाने में तृप्ति का अनुभव करती है |

"बनाती रसोई, सभी को खिलाती, इसी काम में आज मैं तृप्ति पाती |"
यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ की अनुपस्थिति में पुत्र का पालन-पोषण करना अपना कर्तव्य समझती है तो विष्णुप्रिया सास की सेवा एवं घर की सफाई को अपना धर्म मानती है |

"रात रहते ही उठ झाड़ घर,
भृत्य के रहते हुए भी स्वयं सेवा करती सास की |" (विष्णुप्रिया)
गुप्त जी ने अपने काव्य में उपेक्षित समझे जाने वाली नारी पात्रों को स्थान देकर उनके प्रति सहानुभूति अभिव्यक्त की है | भले ही गुप्त जी ने आधुनिक कवियों की भांति नारी के पुरुषों के समान अधिकार की बात नहीं की परंतु नारी के त्याग, समर्पण और प्रेम के महत्व को प्रतिपादित अवश्य किया | भारतीय मिथक शास्त्रों में वर्णित छवि के आधार पर सीता को अवश्य माता कहकर सम्मान प्रदान किया जाता है परंतु अन्य सभी पात्र उपेक्षित ही रहते हैं | गुप्त जी अपने काव्य में सीता के साथ-साथ कैकेयी, उर्मिला, यशोधरा, कुब्जा, हिडिम्बा आदि नारी पात्रों को भी अपेक्षित स्थान व सम्मान प्रदान करते हैं | गुप्त जी 'रामचरितमानस' की लांछिता कैकेयी को 'साकेत' में आदरणीय माता के रूप में उपस्थित कर सबको आश्चर्यचकित कर देते हैं और अपनी मौलिक उदभावना का परिचय देते हैं |

माता चाहे पौराणिक ग्रंथों की हो, वर्तमान की हो या अतीत की ; प्रत्येक युग और प्रतीक देशकाल में माता अपनी संतान के लिए सभी दुखों को सहन करती है और उस पर अपने दखों की छाया भी नहीं आने देती | 'यशोधरा' में माता यशोधरा स्वयं सभी दुःखों को सहन करते हुए अपने बेटे राहुल को उनसे दूर रखना चाहती है |

"बेटा मैं तो हूँ रोने को, तेरे सारे मल धोने को, हँस तू.... |"
त्याग, दया और ममता की प्रतिमूर्ति नारी में स्वाभिमान की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है | यशोधरा को अपने प्रेम और भक्ति पर पूर्ण विश्वास है | इसीलिए वह प्रभु गौतम के दर्शन के के लिए जाने से मना कर देती है और विश्वासपूर्वक कहती है —
"भक्त नहीं जाते कहीं, आते हैं भगवान |"
'यशोधरा' में गौतम बुद्ध यशोधरा के मान की रक्षा करते हैं | वस्तुतः यह गुप्त जी की नारी-विषयक भावना की काव्यमय अभिव्यक्ति है |

नारी पुरुष की अर्धांगिनी है | वह पति के प्रत्येक सुख-दुख की संगिनी है | इसी भाव के बल पर सीता वन-गमन की अनुमति लेने में सफल होती है, उर्मिला अपने पति को सहर्ष वन में भेज देती है और यशोधरा इसी अधिकार-भाव से गौतम की उपलब्धि में अपना अंश मानती है —
"उसमें मेरा भी कुछ होगा, जो कुछ तुम पाओगे |"3,4,5]

गुप्त जी ने अपने साहित्य में नारी को पुरुष का प्रेरणा स्रोत माना है |गुप्त जी के अनुसार नारी पुरुष को उन्नति की दिशा में ले जाती है |नारी कभी माँ के रूप में, कभी पत्नी के रूप में और कभी बहन के रूप में पुरुष को प्रेरित करते है | संकट के समय में वह अपने पुत्र, पति, भाई आदि की रक्षा करती है | नारी समस्त मानव जाति के प्रति कल्याणकारी भावनाएँ रखती है | 'यशोधरा' में गौतम बुद्ध स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हैं —
"क्षीण हुआ वन में क्षुधा से मैं विशेष जब |
मुझ को बचाया मातृजाति ने ही खीर से |"
अपने कर्तव्य का भली प्रकार निर्वहन करने के उपरांत भी यदि नारी प्रताड़ित व लांछित हो तो उसका प्रतिकार करना स्वाभाविक है | पाँच पतियों वाली पांचाली कीचक से लांछित होकर कह उठती है —
"जिसके पति हों पाँच-पाँच ऐसे बलशाली |
सहूँ लांन्छना प्रिया उन्हीं की मैं पांचाली ||"
नारी को गृहलक्ष्मी कहा गया है | वह घर की स्वामिनी है | यह पद उसे कठोर साधना के पश्चात प्राप्त हुआ है | वह आंतरिक व्यवस्था की संचालिका है | 'जय भारत' में स्वावलंबन पर बल देते हुए नारी के इसी रूप को महत्व दिया गया है |
गुप्त जी ने नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करके उसके उदात्त एवं आदर्श रूप को स्वीकार किया है | नारी क्षमा की देवी है | एक स्वर से सांसारिक भोगियों एवं आध्यात्मिक योगियों ने अपने अपराधों को स्वीकार करते हुए उससे क्षमा याचना करके ही महान पद की प्राप्ति की है —
"पैरों पर गिर पड़े प्रिया के भूपवर.....|" (शकुंतला)
बड़े-बड़े ऋषि-मुनि नारी के त्याग और समर्पण के आगे नतमस्तक हैं-
""गिर पड़े दौड़ सौमित्र प्रियापद-तल में |" (साकेत)
मैथिलीशरण गुप्त जी मुख्य रूप से उपेक्षित नारियों के उन्नायक माने जाते हैं परंतु इसके साथ-साथ सामान्य गृहस्थ नारियों के त्याग और समर्पण का वर्णन करके वे मानव सभ्यता के विकास में नारियों के अद्वितीय योगदान को प्रकाश में लाते हैं | वस्तुतः मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चित्रण भारतीय परंपरा के अनुकूल मिलता है जो प्रेम, त्याग, समर्पण और सहनशीलता की मूर्ति है | यदि केवल इस परंपरागत दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन किया जाए तो गुप्त जी का नारी-वर्णन हिंदी साहित्य की एक मूल्यवान निधि है | भले ही गुप्त जी नारी शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने वाले किसी क्रांतिकारी नारी-पात्र का सृजन नहीं कर पाए परंतु फिर भी उनके काव्य में नारी के महान कार्यों व उसके त्याग के प्रति आदरांजलि तो मिलती ही है |

II. विचार-विमर्श

नारियों की दुरवस्था तथा दुःखियों दीनों और असहायों की पीड़ा ने उसके हृदय में करुणा के भाव भर दिये थे। यही कारण है कि उनके अनेक काव्य ग्रंथों में नारियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं पीड़ित के प्रति सहानुभूति झलकती है। नारियों की दशा को व्यक्त करती उनकी ये पंक्तियां पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है-
अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥
पतिवियुक्ता नारी का वर्णन
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता के विमर्श ने गुप्त जी को साकेत महाकाव्य लिखने के लिए प्रेरित किया। भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारती की प्रार्थना करने वाले कवि कालान्तर में, विरहिणी नारियों के दुःख से द्रवित हो जाते हैं। परिवार में रहती हुई पतिवियुक्ता नारी की पीड़ा को जिस शिद्दत के साथ गुप्तजी अनुभव करते हैं और उसे जो बानगी देते हैं, वह आधुनिक साहित्य में दुर्लभ है। उनकी वियोगिनी नारी पात्रों में उर्मिला (साकेत महाकाव्य), यशोधरा (काव्य) और विष्णुप्रिया खण्डकाव्य प्रमुख है। उनका करूण विप्रलम्भ तीनों पात्रों में सर्वाधिक मर्मस्पर्शी बन पड़ा है। उनके जीवन संघर्ष, उदात्त विचार और आचरण की पवित्रता आदि मानवीय जिजीविषा और सोदेश्यता को प्रमाणित करते हैं। गुप्तजी की तीनों विरहिणी नायिकाएं विरह ताप में तपती हुई भी अपने तन-मन को भस्म नहीं होने देती वरण कुन्दन की तरह उज्ज्वल वर्णी हो जाती हैं।

साकेत की उर्मिला रामायण और रामचरितमानस की सर्वाधिक उपेक्षित पात्र है। इस विरहिणी नारी के जीवन वृत्त और पीड़ा की अनुभूतियों का विशद वर्णन आख्यानकारों ने नहीं किया है। उर्मिला लक्ष्मण की पत्नी है और अपनी चारों बहनों में वही एक मात्र ऐसी नारी है, जिसके हिस्से में चौदह वर्षों के लिए पतिवियुक्ता होने का दुःख मिला है। उनकी अन्य तीनों बहनों में सीता, राम के साथ, मांडवी भरत के सान्निध्य में तथा श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्न के संग जीवन यापन करती हैं। उर्मिला का जीवन वृत्त और उसकी विरह-वेदना सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त जी की लेखनी से साकार हुई हैं।

गुप्तजी ने अपने काव्य का प्रधान पात्र राम और सीता को न बनाकर लक्ष्मण, उर्मिला और भरत को बनाया है। गुप्तजी ने साकेत में उर्मिला के चरित्र को जो विस्तार दिया है, वह अप्रतिम है। कवि ने उसे 'मूर्तिमति उषा', 'सुवर्ण की सजीव प्रतिमा', 'कनक लतिका', 'कल्पशिल्पी की कला' आदि कहकर उसके शारीरिक सौन्दर्य की अनुपम झांकी प्रस्तुत की है। उर्मिला प्रेम एवं विनोद से परिपूर्ण हास-परिहासमयी रमणी है।

मैथिलीशरण गुप्त को आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का मार्गदर्शन प्राप्त था । आचार्य द्विवेदी उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित करते थे, उनकी रचनाओं में संशोधन करके अपनी पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित करते थे। मैथिलीशरण गुप्त की पहली खड़ी बोली की कविता 'हेमन्त' शीर्षक से सरस्वती (१९०७ ई०) में छपी थी।
गुप्त जी ने नारी के प्रति सहानुभूति प्रकट करके पुरुषों के भीतर यह प्रेरणा जागृत की, कि वह अपनी इच्छा से नारियों को उनका उचित अधिकार दे । इसीलिए गुप्त जी के सभी काव्यों में नारी की करुणा ही बोलती है और वह (नारियों) इसी हथियार से पुरुषों की कठोरता को कम कर सकती है।

पूरा देश मैथिली शरण गुप्त को राष्ट्रकवि के रूप से जानता है पर बुंदेलखंड के लोग अपनी धरती के इस लाल को 'दद्दा' कहकर संबोधित करते हैं। झांसी से तीस किलोमीटर दूर चिरगांव कसबे में 3 अगस्त 1886 को रामचरण सेठ के घर पैदा हुए बालक का नाम रखा गया मैथिली शरण गुप्त। मां काशीबाई काफी धार्मिक और सुशिक्षित थीं, इस कारण मैथिलीशरण पर भी धर्म और राष्ट्रभक्ति की गहरी छाप रही। पिता बृज भाषा में कविताएं लिखते थे, जिससे बालक का रुझान साहित्य की ओर हो गया।[2,3,4]

उन्होंने लिखा है, अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी। गौतम बुद्ध के चुपचाप रात में घर छोड़कर चले जाने पर मैथिली शरण गुप्त ने यशोधरा की विरही मनोदशा और नारी मन की दृढ़ता का वर्णन करते हुए लिखा है, सखी वो मुझसे कहकर तो जाते, कहते तो क्या मुझको पथ बाधा में पाते। इतना ही नहीं साकेत में उर्मिला का विरह वर्णन तथा रत्नावली की रचना में नारी मन की दृढ़ता का चित्र उकेरा गया है। इसके अलावा पंचवटी, भारत भारती, झंकार, विश्ववेदना. जयद्रथ वध, तिलोत्तमा रंग में भंग व साकेत जैसी कृतियों की रचना मैथिली शरण गुप्त ने की।

चिरगांव की बड़ी बखरी में था देश के बड़े साहित्यकारों का आना जाना
चिरगांव में स्थित मैथिली शरण गुप्त के मकान को लोग बड़ी बखरी के नाम से जानते हैं। उनकी पुत्रवधू शशि गुप्त बताती हैं कि जब दद्दा जीवित थे तब हरिवंश राय बच्चन, अज्ञेय, महादेवी वर्मा का बड़ी बखरी में आना जाना लगा रहता था। साहित्यिक गोष्ठियां भी जमा करती थीं। 23 नवंबर 1929 को महात्मा गांधी भी मैथिली शरण गुप्त के घर के सदस्य की तरह ही रहने वाले साहित्यकार मुंशी अजमेरी के आमंत्रण पर चिरगांव राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के
आवास पर आए थे। महात्मा गांधी ने ही गुप्त जी के पचासवें जन्मदिन पर उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया था। गुप्त जी को पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया।

III. परिणाम

मैथिली शरण गुप्त की पुत्रवधू शशि गुप्त बताती हैं कि देश की ख्यातिनाम कवयित्री महादेवी वर्मा हर श्रावण पर दद्दा को राखी बांधने चिरगांव आती थीं। जब कभी वे नहीं आ सकीं तो दद्दा उनके पास राखी बंधवाने पहुंच जाते थे। यह बहन भाई का रिश्ता जीवन पर्यंत चलता रहा। हम सब उन्हें बुआ कहते थे। मैथिली शरण गुप्त की पुत्रवधू शशि गुप्त बताती हैं कि साकेत की पात्र लक्ष्मण जी की पत्नी उर्मिला के त्याग और तपस्या से गुप्त जी इस कदर प्रभावित थे कि उन्होंने अपने बेटे का नाम उर्मिल चरण रख दिया। मैथिली शरण गुप्त अपना काव्य गुरु महावीर प्रसाद द्विवेदी को मानते थे, उनके ही सानिध्य में उन्होंने सरस्वती पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करवा कर अपनी साहित्य यात्रा प्रारंभ की थी।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की पुत्रवधू श्रीमति शशि गुप्ता (काकी) बताती हैं कि साकेत की रचना गुप्त जी के लिए एक चुनौती थी। बुंदेलखंड की ही धरती पर जन्मे गोस्वामी तुलसी दास का रामचरित मानस और ओरछा में जन्मे महाकवि केशव की रामचंद्रिका दो बड़े ग्रंथ श्रीराम के चरित पर लिखे जा चुके थे। मैथिली शरण जी ने साकेत में इसीलिए लिखा है, राम तुम्हारा वृत स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है। उन्होंने लक्ष्मण और उनकी पत्नी उर्मिला को केंद्रित कर साकेत की रचना की।

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रसिद्ध प्रबंध काव्य है जिसका प्रकाशन सन् 1933 ई. में हुआ। अपने छोटे भाई सियारामशरण गुप्त के अनुरोध करने पर मैथिलीशरण गुप्त ने यह पुस्तक लिखी थी। यशोधरा महाकाव्य में गौतम बुद्ध के गृह त्याग की कहानी को केन्द्र में रखकर यह महाकाव्य लिखा गया है। इसमें गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा की विरहजन्य पीड़ा को विशेष रूप से महत्त्व दिया गया है। यह गद्य-पद्य मिश्रित विधा है जिसे चम्पूकाव्य कहा जाता है।

यशोधरा का उद्देश्य है पति-परित्यक्तों यशोधरा के हार्दिक दु:ख की व्यंजना तथा वैष्णव सिद्धांतों की स्थापना। अमिताभ की आभा से चकित भक्तों को अदृश्य यशोधरा की पीड़ा का, मानवीय सम्बंधों के अमर गायक, मानव-सुलभ सहानुभूति के प्रतिष्ठापक

मैथिलीशरण गुप्त की अंत:प्रवेशिनी दृष्टि ने ही सर्वप्रथम साक्षात्कार किया। साथ ही 'यशोधरा' के माध्यम से सन्यास पर गृहस्थ प्रधान वैष्णव धर्म की गौरव प्रतिष्ठा की है।

== कथानक ==कथारम्भ गौतम के वैराग्य चिंतन से होता है। जरा, रोग, मृत्यु आदि के दृश्यों से वे भयभीत हो उठते हैं। अमृत तत्व की खोज के लिए गौतम पत्नी और पुत्र को सोते हुए छोड़कर 'महाभिनिष्क्रमण' करते हैं। यशोधरा का निरवधि विरह अत्यंत कारुणिक है। विरह की दारुणता से भी अधिक उसको खलता है प्रिय का "चोरी-चोरी जाना"। इसर समझती है परंतु उसे मरण का भी अधिकार नहीं है, क्योंकि उस पर राहुल के पालन-पोषण का दायित्व है। फलत: "आँचल में दूध" और "आँखों में पानी" लिए वह जीवनयापन करती है। सिद्धि प्राप्त होने पर बुद्ध लौटते हैं, सब लोग उनका स्वागत करते हैं परंतु मानिनी यशोधरा अपने कक्ष में रहती हैं। अंतत: स्वयं भगवान उसके द्वार पहुँचते हैं और भीख माँगते हैं। यशोधरा उन्हें अपनी अमूल्य निधि राहुल को दे देती है तथा स्वयं भी उनका अनुसरण करती है। इस कथा का पूर्वार्द्ध एवं इतिहास प्रसिद्ध है पर उत्तरार्द्ध कवि की अपनी उर्वर कल्पना की सृष्टि है।

भाषा शैली

'यशोधरा' का प्रमुख रस शृंगार है, शृंगार में भी केवल विप्रलम्भ। संयोग का तो एकांताभाव है। शृंगार के अतिरिक्त इसमें करुण, शांत एवं वात्सल्य भी यथास्थान उपलब्ध हैं। प्रस्तुत काव्य में छायावादी शिल्प का आभास है। उक्ति को अद्‌भुत कौशल से चमत्कृत एवं सप्रभाव बनाया गया है। यशोधरा की भाषा शुद्ध खड़ीबोली है- प्रौढ़ता, कांतिमयता और गीतिकाव्य के उपयुक्त मृदुलता और मसृणता उसके विशेष गुण हैं, इस प्रकार यशोधरा एक उत्कृष्ट रचना सिद्ध होती है।

प्रबंध काव्य

केवल शिल्प की दृष्टि से तो वह 'साकेत' से भी सुंदर है। काव्य-रूप की दृष्टि से भी 'यशोधरा' गुप्त जी के प्रबंध-कौशल का परिचायक है। यह प्रबंध-काव्य है- लेकिन समाख्यानात्मक नहीं। चरित्रोद्‌घाटन पर कवि की दृष्टि केंद्रित रहने के कारण यह नाटय-प्रबंध है, और एक भावनामयी नारी का चरित्रोद्‌घाटन होने से इसमें प्रगीतात्मकता का प्राधान्य है। अत: 'यशोधरा' को प्रगीतात्मकता नाट्य प्रबंध कहना चाहिए, जो एक सर्वथा परम्परामुक्त काव्य रूप है।

यशोधरा : एक आदर्श नारी

यशोधरा का विरह अत्यंत दारुण है और सिद्धि मार्ग की बाधा समझी जाने का कारण तो उसके आत्मगौरव को बड़ी ठेस लगती है। परंतु वह नारीत्व को किसी भी अंश में हीन मानने को प्रस्तुत नहीं है। वह भारतीय पत्नी है, उसका अर्धांगी-भाव सर्वत्र मुखर है- "उसमें मेरा भी कुछ होगा जो कुछ तुम पाओगे।" सब मिलाकर यशोधरा आदर्श पत्नी, श्रेष्ठ माता और आत्मगौरव सम्पन्न नारी है। परंतु गुप्त जी ने यथासम्भव गौतम के परम्परागत उदात्त चरित्र की रक्षा की है। यद्यपि कवि ने उनके विश्वासों एवं सिद्धान्तों को अमान्य ठहराया है तथापि उनके चिरप्रसिद्ध रूप की रक्षा के लिए अंत में 'यशोधरा' और 'राहुल' को उनका अनुगामी बना दिया है। प्रस्तुत काव्य में वस्तु के संघटक और विकास में राहुल का समधिक महत्त्व है। यदि राहुल सा लाल गोद में न होता तो कदाचित यशोधरा मरण का ही वरण कर लेती और तब इस 'यशोधरा' का प्रणयन ही क्यों होता। 'यशोधरा' काव्य में राहुल का मनोविकास अंकित है। उसकी बालसुलभ चेष्टाओं में अद्‌भुत आकर्षण है। समय के साथ-साथ उसकी बुद्धि का विकास भी होता है, जो उसकी उक्तियों से स्पष्ट है। परंतु यह सब एकदम स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता। कहीं कहीं तो राहुल प्रौढों के समान तर्क, युक्तिपूर्वक वार्तालाप करता है, जो जन्मजात प्रतिभासम्पन्न बालक के प्रसंग में भी निश्चय ही अतिरंजना है।[5,6]

यशोधरा एक चरित्र प्रधान काव्य है। इस ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य ही उपेक्षिता यशोधरा के चरित्र को उभारना है। काव्य के नामकरण से ही सिद्ध हो जाता है कि यशोधरा ही इस काव्य की प्रमुख पात्र है। उसी की करुण गाथा को गूंथने के उद्देश्य से गुप्तजी ने इस काव्य की रचना की है। इन पंक्तियों से इस बात का ज्ञात हो जाता है-

अबला जीवन हाय! तुम्हारी येही कहानी--
आँचल में है दूध और आँखों में पानी!

विरहिणी

यशोधरा के विरहिणी रूप पर भी कवि ने ज्यादा प्रकाश डाला है। विरहिणी गोपा रात-दिन आँसू बहाती है। उसे जान पड़ता है कि उसका जन्म केवल रोने के लिए हुआ है। उस अबला जीवन की आँखों में सदैव पानी भरा रहता है और इसीलिए वह अपने पति को नयन-नीर ही देती है।

राहुल के सामने रोने से राहुल को कष्ट होता है, इसीलिए वह उसके सो जाने के बाद ही जी भरकर क्रन्दन करती है। इस प्रकार वह रोते-रोते रात काटती है। उसके नेत्रों से नींद सदा के लिए विदा हो गई है।

गौतम बुद्ध के चले जाने पर यशोधरा अपने पूर्वाराग को स्मरण करती हुई कहती है--

प्रियतम ! तुम श्रुति पथ से आए।
तुम्हें हृदय में रखकर मैं ने अधर-कपाट लगाए।'

उन्माद की स्थिति में यशोधरा 'जाओ मेरे सिर के बाल' कहकर अपने एडीचम्बी सुन्दर केशों को काट डालती है और राहुल को अपने बाहुपाश में इतने जोर से जकड लेती है कि उसका दम घुटने लगता है।

वास्तव में, वियोग का दुख जब अग्राह्य हो जाता है-- "मैं उठ धाऊँ।" वह अपने वनमाली को बुलाती है- वह भी जल्दी क्योंकि उसे भय है कि कहीं 'आँखों का पंछी' उनके आने से पूर्व ही न उड जाय, किन्तु गोपा को तुरन्त ही बोध होता है कि स्नेह तो जलने के लिए बना है और यह देह सब कुछ सहने के लिए बनी है।

यशोधरा के आँसू इतने मूल्यवान है कि शुद्धोधन उन्हें लेकर 'मुक्ति मुक्ता' तक छोडने को तैयार है। विरहिणी यशोधरा व्रत रखती है, फटे-पुराने वस्त्र पहनती है। इस प्रकार राजभोग से वंचित यशोधरा केवल गौतम की चिन्ता में जी रही है।

'न जाने कितनी बरसातें बीत गई' पर गोपा के दिन नहीं फिरे। वह ऊष्मा-सी ठंडी साँसें भरती दुःख से सुख का मूल्य आँकती है। उसे विश्वास है कि उसके खलने वाले दिन अवश्य कट जायेंगे और खेलने वाले दिन अवश्य आयेंगे और तब वह एक दिन प्रभु का दर्शन अवश्य कर पायेंगे। इसीलिए वह कभी-कभी अपने नयन को व्यर्थ व्याकुल होने से मना करती है क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि इस रोने में भी कुछ नहीं रखा है।

अनुरागिनी

अनुरागिनी के रूप मेम यशोधरा का चरित्र निखर उठा है। उसके चरित्र की विशेषता यह है कि वह अनुरागिनी होते हुए भी मानिनी है। वह अपने पति से जितना अनुराग रखती है उतना भी मान रखती है। वास्तव में वह मीरा की भाँति अपने पति-परमेश्वर की उपासिका है। वैष्णव-भक्ति में मान, दर्प, उपालम्भ आदि को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यशोधरा का भी कथन है--

भक्त नहीं जाते कहीं, आते हैं भगवान ;
यशोधरा के अर्थ है, अब भी अभिमान।
इसी निज राजभवन में।

जननी

यशोधरा का जननी रूप उसके अनुरागिणी रूप से भी अधिक मुखरित है। पति से वियुक्त नारी का एकमात्र संबल उसका पुत्र होता है। यशोधरा की 'मलिन गूदडी का लाल' , 'उसके शरीर का अंराग' , 'आँखों का अंजन' , 'विपक्ति का सहारा' , 'जीवन-नैया का खिवैया' , 'दुखिनी का सुख' , 'उसका भैया' , 'उसका राजा' सभी कुछ राहुल है। यदि गौतम ने उसके इस अवलम्ब को भी छिन लिया है तो वह भी श्री गोविन्दवल्लभ पन्त के नाटक 'वरमाला' की नायिका वैशालिनी की तरह दर-दर जंगलों की खाक छानती फिरती। इसके अतिरिक्त उसे सास-ससुर की संवेदना और सहानुभूति प्राप्त न होती, तो वह कभी की काल के गाल में समा गई होती। यशोधरा इस लिए जीती है कि राहुल का भार उसके ऊपर है तथा सास-ससुर की सहानुभूति उसके साथ है।

IV. निष्कर्ष

मानिनी

यशोधरा काव्य में जिस प्रकार यशोधरा का जननी रूप निखरा है उसी प्रकार उसका मानिनी रूप भी। जब भगवान बुद्ध ग्यान प्राप्त करके मगध आए तब शुद्धोधन और महाप्रजावती यशोधरा को बहुतेरा समझाते हैं कि उसे अपने पति के दर्शन के लिए प्रस्तुत होना चाहिए। किन्तु वह इसके लिए प्रस्तुत नहीं होती। वह समझती है कि उसने अपने पति का साथ नहीं छोडा है। उसके पति ही उससे छिपकर घर से निकल गए। अतः उन्हें ही उसके पास आना चहिए। जब उसके सास ससुर उससे मगध चलने का आग्रह करते जाते हैं तो मानिनी यशोधरा आवेश में आकर मूर्छित हो जाती हैं।

जब गौतम बुद्ध कपिलवस्तु मैं पधारते हैं तब मानिनी अब वही बैठी है जहाँ पर उसके प्रियतम उसे छोडकर गए हैं। वह समझाती है कि जब उन्हें इष्ट होगा तब स्वयं आकर या बुलाकर वे उसे अपने चरणों मैं स्थान देंगे। होता भी यही है। स्वयं गौतम बुद्ध को अपनी मानिनी के द्वार पर आना पड़ता है और कहना पड़ता है--

मानिनी मान तजो, लो, अब तो रही तुम्हारी बात।[6]

संदर्भ

1. "मैथिली शरण गुप्त". मिलनसागर. मूल (एचटीएमएल) से 8 दिसंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 जनवरी 2007.
2. ↑ "मैथिलीशरण गुप्त सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय कवि थे". मूल से 15 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अप्रैल 2019.
3. ↑ "राष्ट्रकवि व उनकी भारत भारती". मूल से 15 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अप्रैल 2019.
4. ↑ "Archived 2015-10-15 at the वेबैक मशीन" (PDF). Ministry of Home Affairs, Government of India. 2015. Archived from the original (PDF) on 15 November 2014. Retrieved 21 July 2015.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March 2024 |

5. ↑ [https://web.archive.org/web/20200808120217/https://www.shikshabhartinetwork.com/dayinhistory.php?eventId=3778 Archived 2020-08-08 at the वेबैक मशीन मैथिलीशरण गुप्त
6. ↑ "चारुचन्द्र की चंचल किरणें". kavitakosh.org. मूल से 6 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अप्रैल 2019.

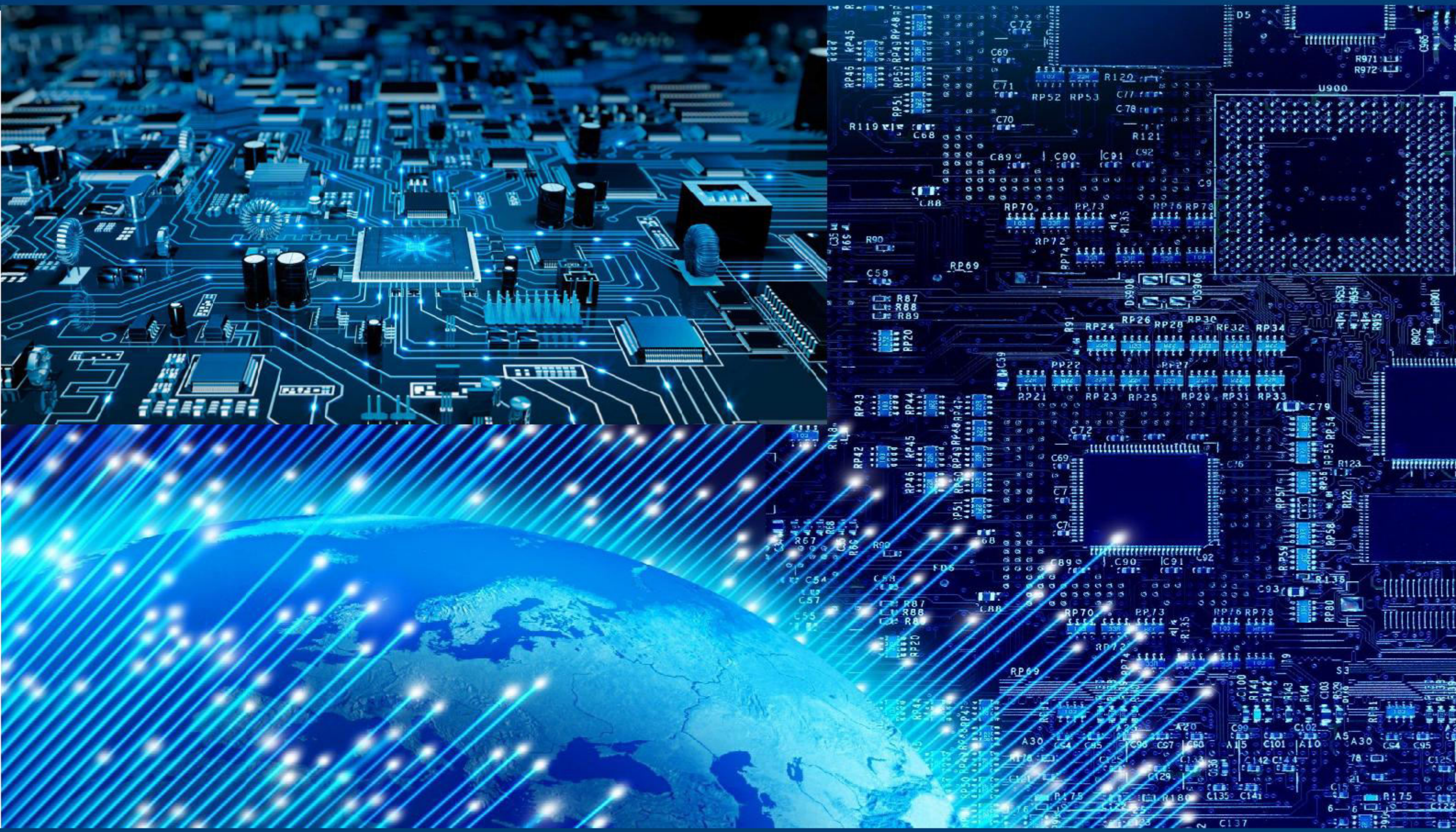

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com